# विषयवस्तु के चयन के मानदण्ड -

पाठ्यचर्या की विषय-वस्तु ऐसी होनी चाहिए कि छात्र ज्ञानार्जन करके दैनिक जीवन में उसका प्रयोग कर सके। चयनित विषयवस्तु ऐसी होनी चाहिए कि उससे छात्रों को ज्ञान प्राप्त हो सके और वे मानव जीवन की वास्तविकता को समझ सकें।

| ज्ञान | विषयवस्तु | ज्ञान |
|---|---|---|
| (सूचनाओं का औपचारिक संगठन) | (शैक्षिक प्रयोजनों के लिए ज्ञान का चयन) | ज्ञान विषयवस्तु की समझ और उसके विभिन्न प्रयोग |

यदि हम विस्तार से विषय-वस्तु के चयन के मापदण्डों की चर्चा करें तो वृहद स्तर पर विषयवस्तु के चयन के मापदण्ड का आधार किसी राष्ट्र या समाज का सामाजिक-राजनैतिक तथा शिक्षा दर्शन होना चाहिए। सूक्ष्म स्तर पर मापदण्ड ऐसा होना चाहिए कि वह छात्रों के जरूरतों के लिए निर्धारित उद्देश्यों के अनुरूप हो। विषयवस्तु के चयन हेतु निर्धारित मानदण्ड अधोलिखित हैं।

1. आत्मनिर्भरता
2. महत्व
3. वैधता
4. रुचि
5. उपयोगिता
6. अधिगम्यता
7. अधिगम की सीमा के अन्दर

प्राचार्य
मेमोरियल महाविद्यालय

classmate
Date
Page

## अध्ययन - अध्यापन की दृष्टि से चयनित अधिगम अनुभवों एवं अन्तर्वस्तु का संगठन

पाठ्यचर्या निर्माण की प्रक्रिया में शैक्षिक आवश्यकताओं के निर्धारण, अधिगम अनुभवों के चयन तथा अन्तर्वस्तु / विषयवस्तु के चयन के पश्चात् प्रमुख समस्या विषयवस्तु को संगठित करने की होती है। हैरिक एवं घारटलर के अनुसार तो अधिगम अनुभवों एवं अन्तर्वस्तु संग्रथन एवं संगठन की पाठ्यक्रम प्रक्रिया की केन्द्रिय भूत समस्या है। इसकी दृष्टि में शैक्षिक आवश्कताओं का निर्धारण शिक्षार्थी की प्रकृति का अध्ययन आदि की उपयोगिता पाठ्यक्रम के संगठन के कार्य की तैयारी के रूप में ही होती है।

विषयवस्तु का चयन करने के पश्चात् उसे सुव्यवस्थित करना आवश्यक है। चूँकि पाठ्यचर्या मूलतः अधिगम की योजना है, इसकी विषयवस्तु को तर्कसंकत ढंग से सुव्यवस्थित किया जाना चाहिए ताकि इससे शैक्षिक उद्देश्यों को सुगमता से प्राप्त किया जा सके। अधिगम को निर्धारित करने वले महत्वपूर्ण कारकों में से पाठ्यचर्या संगठन अत्यन्त महत्वपूर्ण कारक है। यदि पाठ्यचर्या सुव्यवस्थित नहीं होगी तो इसमें निर्देशन की कमी होगी और यह अपने मूलभूत उद्देश्यों को प्राप्त करने में असफल रहेगी।

पाठ्यचर्या का संगठन एक जटिल व कठिन कार्य है। इसके लिए शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की पूरी समझ होना आवश्यक है।

पाठ्यचर्या में शामिल विषयवस्तु में क्रमबद्धता, निरन्तरता और स्वीकरण का अभाव पाठ्यचर्या नियोजन की प्रमुख समस्या है।

पाठ्यचर्या नियोजन के प्रमुख चरण निम्नलिखित है।

1. क्रमबद्धता।
2. निरन्तरता
3. स्वीकरण

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया